B.A. I (Hons) Theory of Plurality (Anekantavada) Jain

प्रश्न : जैन दर्शन के अनेकान्तवाद की व्याख्या करें।

Ans : जैन दर्शन का तत्त्वमीमांसीय विचार अनेकान्तवाद के नाम से जाना जाता है। इस मत के अनुसार अनेक पदार्थ वास्तविक है और सभी के सभी अनन्त गुणों से युक्त होते हैं। यह दर्शन वस्तुवादी एवं सापेक्षवादी अनेकवाद का समर्थक है। इसे वस्तुवादी इसलिए कहा जाता है, क्योंकि यह प्रत्येक पदार्थ के स्वतंत्र अस्तित्व में विश्वास करता है। इसे सापेक्षवादी इसलिए कहा जाता है कि यह किसी भी पदार्थ को निरपेक्ष नहीं मानता है। यह अनेकवाद का समर्थक है, क्योंकि यहाँ वास्तविकता की संख्या अनेक मानी गयी है। प्रत्येक वस्तु के अनन्त धर्म होते हैं। तत्व अनन्त धर्मात्मक है। कहा गया है कि "अनन्त धर्मकम् वस्तु, अनन्त धर्मात्मकमेव तत्वम्"।

जैन दर्शन के अनुसार इस विश्व में हमें दो प्रकार के पदार्थों का अनुभव होता है :

(i) जड़ तथा (ii) चेतन

जड़ पदार्थ को यहाँ पुद्गल कहा गया है। जैसे — टेबुल, कुर्सी, पैसा इत्यादि जड़ होने के कारण पुद्गल है। इस दर्शन में चेतन पदार्थ को जीव कहा जाता है। पुद्गल तथा जीव एक दूसरे से पृथक, स्वतंत्र तथा वास्तविक है। इन दोनों की संख्या अनेक है। पुद्गल असंख्य होते हैं और जीव भी असंख्य है। सभी के सभी पुद्गल तथा जीव एक दूसरे से स्वतंत्र वास्तविकताएँ हैं। ये अपने अस्तित्व के लिए एक दूसरे पर निर्भर नहीं करते हैं। पुद्गल तथा जीव की संख्या अनेक मानने के कारण ही जैन दर्शन का तत्वमीमांसीय विचार अनेकान्तवाद के नाम से पुकारा जाता है। यह दर्शन स्वीकार करता है कि प्रत्येक पुद्गल और प्रत्येक जीव के असंख्य पक्ष होते हैं। कोई भी पदार्थ या वस्तु असंख्य गुणों से युक्त है। यहाँ स्वीकार किया गया है कि 'अनन्त धर्मकम वस्तु' अर्थात कोई भी वस्तु अनन्त धर्मों से युक्त है। सीमित मानव के लिए यह संभव नहीं है कि किसी भी वस्तु के अनन्त धर्मों का ज्ञान एक साथ प्राप्त कर सके। सीमित मानव किसी भी वस्तु के कुछ गुणों का ज्ञान ही प्राप्त कर सकता है। किसी भी वस्तु के सभी गुणों का ज्ञान प्राप्त कर लेना सर्वज्ञ हो जाना है। साधारण मनुष्य सर्वज्ञ नहीं होता है। यही कारण है कि वह किसी भी वस्तु के सभी गुणों का ज्ञान प्राप्त नहीं कर सकता है।

उपर्युक्त तथ्य को स्पष्ट करते हुए जैन

Scanned with CamScanner

दर्शन स्वीकार करता है, कि जो व्यक्ति किसी एक पदार्थ के सभी गुणों का ज्ञान प्राप्त कर लेता है, वह वस्तुतः सभी पदार्थों के सभी गुणों के ज्ञान प्राप्त करता है। साथ ही जो व्यक्ति सभी पदार्थों के सभी गुणों का ज्ञान प्राप्त करता है, वह वस्तुतः एक पदार्थ के सभी गुणों का ज्ञान प्राप्त करता है। अर्थात " He who knows all the qualities of one thing, knows all the qualities of all things and he who knows all the qualities of all things knows all the qualities of one thing." अर्थात "एको भावः सर्वथा येन दृष्टः सर्वे भावाः सर्वथा तेन दृष्टाः।" मानव ज्ञान एकांगी, आंशिक, अपूर्ण, सापेक्ष एवं सीमित होता है। तदनुरूप व्यक्ति का परामर्श (निर्णय) भी एकांगी, सापेक्ष एवं सीमित होता है, जिसे स्याद्वाद के नाम से जाना जाता है।

वस्तुतः स्याद्वाद तथा अनेकान्तवाद एक ही सिद्धान्त के दो पक्ष हैं। एक ज्ञानमीमांसीय पक्ष है तथा दूसरा तत्त्वशास्त्रीय पक्ष है। पहला पक्ष इस बात को स्पष्ट करता है कि मनुष्य का ज्ञान सीमित और सापेक्ष होता है और दूसरा पक्ष यह स्पष्ट करता है कि वास्तविकता की संरचना अनन्त है। जैन दर्शन का तत्त्वमीमांसीय पक्ष यह स्वीकार करता है कि वास्तविकता अनेक हैं और ये सभी के सभी अनंत गुणों से युक्त होते हैं। ज्ञानमीमांसीय विचार के द्वारा यह स्पष्ट किया गया है, कि हम किसी भी वास्तविकता के असंख्य गुणों का ज्ञान नहीं प्राप्त कर सकते हैं फलस्वरूप हमारा ज्ञान और निर्णय सापेक्ष होता है। इसे स्याद्वाद कहा जाता है।

जैन दर्शन किसी भी पदार्थ के स्वतंत्र अस्तित्व में विश्वास करता है और जिस पदार्थ का स्वतंत्र अस्तित्व होता है, उसे द्रव्य (Substance) कहा जाता है। द्रव्य वह है जो गुण तथा पर्याय के माध्यम से अस्तित्ववान होता है। द्रव्य की परिभाषा देते हुए यहाँ कहा गया है कि द्रव्य वह है, जिसमें गुण तथा पर्याय पाये जाते हैं - " गुण-पर्यायवद् द्रव्यम्"

अब प्रश्न उठता है कि गुण किसे कहा जाता है तथा पर्याय क्या है? इस प्रश्न के उत्तर में जैन दर्शन स्वीकार करता है कि किसी भी पदार्थ के असंख्य धर्मों में से जो धर्म शाश्वत तथा अनिवार्य

Scanned with CamScanner

होता है उन्हें गुण कहा जाता है और जो धर्म आकस्मिक होता है, उन्हें पर्याय कहा जाता है। उदाहरणस्वरूप : टेबुल एक वास्तविकता है, जो असंख्य धर्मों से युक्त है। टेबुल के असंख्य धर्मों में कुछ धर्म आवश्यक तथा अनिवार्य है, जैसे - tableness, यह table का एक ऐसा धर्म है, जो table के लिए अनिवार्य धर्म है। इसे ही table का गुण कहा जाएगा। लेकिन table में कुछ ऐसा भी धर्म है, जो आकस्मिक है, जैसे - table का छोटा होना, बड़ा होना, लकड़ी का होना, लोहा का होना, गोल होना, चौकोर होना आदि। इन्हें table का गुण नहीं कहा जाएगा, बल्कि पर्याय कहा जाएगा। जैन दर्शन का द्रव्य विचार सामान्य द्रव्य विचार से भिन्न है, क्योंकि इनके अनुसार आवश्यक एवं अनावश्यक गुणों के आधार को ही द्रव्य कहते हैं, परन्तु सामान्य द्रव्य विचार केवल आवश्यक गुणों के आधार को ही द्रव्य स्वीकार करता है।

उपर्युक्त विवेचना से स्पष्ट है कि द्रव्य गुण में एक ऐसा संबंध है कि वे दोनों एक दूसरे के लिए आवश्यक है। द्रव्य के अभाव में गुण नहीं हो सकता और गुण के अभाव में द्रव्य नहीं हो सकता है। दोनों के बीच अविच्छेद्य संबंध (Inseparable relation) है। उदाहरण के लिए मनुष्य का गुण है - मानवता। इन दोनों के बीच अविच्छेद्य संबंध है। मनुष्य के अभाव में मानवता संभव नहीं है और मानवता के अभाव में मनुष्य संभव नहीं है। इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि द्रव्य तथा गुण को एक दूसरे से पृथक नहीं किया जा सकता है। चूँकि गुण द्रव्य के शाश्वत स्वभाव होते हैं। अतः गुण को द्रव्य से पृथक नहीं किया जा सकता है। लेकिन इस प्रकार का संबंध द्रव्य तथा पर्याय के बीच नहीं है। पर्याय के अभाव में द्रव्य हो सकता है। द्रव्य तथा पर्याय के बीच ठीक उसी प्रकार का संबंध है, जो संबंध समुद्र तथा उसके लहरों के बीच है। लहरों के बिना समुद्र हो सकता है, लेकिन समुद्र के बिना लहर नहीं हो सकता है।

द्रव्य तथा पर्याय के उपर्युक्त विवेचना से यह स्पष्ट हो जाता है कि जैन दर्शन का तत्त्वमीमांसीय विचार "unity and difference" या

difference and unity संबंधी विचार है। अर्थात कोई भी द्रव्य गुण की दृष्टि से एक शाश्वत तथा वास्तविक होता है लेकिन वही द्रव्य पर्याय की दृष्टि से अनेक, क्षणिक तथा अवास्तविक होता है। यह विचार ब्रह्मवाद तथा बौद्ध दर्शन के बीच एक प्रकार का समन्वय है, जहाँ ब्रह्मवाद एक ब्रह्म को वास्तविक मानता है, जो शाश्वत है। वहीं बौद्ध दर्शन में किसी भी पदार्थ को शाश्वत नहीं माना गया है अर्थात 'सर्वम् क्षणिकम्' के सिद्धान्त में विश्वास किया गया है। जैन दर्शन इन दोनों के बीच समन्वय करते हुए वास्तविकता को शाश्वत तथा क्षणिक दोनों मानता है। गुण की दृष्टि से वास्तविकता शाश्वत है और पर्याय की दृष्टि से वह क्षणिक है। यही कारण है कि यहाँ द्रव्य की परिभाषा एक दूसरे ही रूप में की गयी है। जिसके अनुसार द्रव्य वह है जिसकी उत्पत्ति होती है, विनाश होता है और शाश्वत होता है।

उपर्युक्त विवेचना के आधार पर यह निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि जैन दर्शन का तत्वमीमांसीय विचार अनेकान्तवादी है। जिसे तत्वमीमांसा की दृष्टि से अनेकान्तवाद कहा गया है उसी को ज्ञानमीमांसा की दृष्टि से स्याद्वाद कहा जाता है। वास्तव में ये दोनों अनेकवादी सापेक्षवादी वस्तुवाद के दो भिन्न-भिन्न रूप हैं।